आदिवासियों की दमित दासताँ : 'आदिवासी नहीं नाचेंगे'

डॉ. प्रवीणकुमार न. चौगुले
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
श्रीमती कस्तुरबाई वालचंद
कॉलेज ऑफ आर्टस् ॲण्ड सायन्स, सांगली
मो. नं. - 9881814116
ई-मेल : pravinkumarc@yahoo.com

शोध-सारांश-

'आदिवासी नहीं नाचेंगे' कहानी-संग्रह कहानियाँ झारखण्ड की पृष्ठभूमि पर लिखी गई हैं। ज्यादातर कहानियों में आदिवासियों की जिंदगी की दुर्दशा का चित्रण उन्होंने किया है। मूल संथाल परगने से संबंधित होने के कारण कहानीकार हाँसदा सौभेन्द्र शेखर ने संथाल आदिवासियों के दमन की दासताँ को बेहद गहराई एवं तीव्र संवेदनशीलता के साथ इन कहानियों में प्रस्तुत किया है। वर्णनात्मकता, प्रकृति-चित्रण, पात्रों की मनोवैज्ञानिकता, प्रभावान्विति, बेहतरीन शब्द-चयन आदि इन कहानियों की विशेषताएँ हैं। आदिवासियों की विवशता एवं मजबूरी का फायदा उठाकर अपने-आप को मुख्य धारा का, सभ्य कहलानेवाला समाज किस प्रकार से उनका दमन कर रहा है, इसका बेहद वास्तविक चित्रण 'आदिवासी नहीं नाचेंगे' कहानी करती है। संगीत, नृत्य, गीत संथालों के लिए पवित्र हैं, लेकिन भूख और गरीबी ने उसे बेचने के लिए संथालों को मजबूर किया है। दिकुओं का दमन एवं घर तथा जमीन के लिए संघर्ष करने की आदिवासियों की विवशता को कहानी उजागर करती है। 'प्रवास का महीना', 'दुश्मन के साथ दोस्ती' तथा 'सिर्फ एक रंडी' कहानियाँ संथाल आदिवासी औरतें एवं लडकियों पर ढ़ाए जानेवाले अकथनीय यौन-शोषण, दर्द एवं प्रताडना को उजागर करती हैं। तालामाई किस्कू, सुलोचना, मोहिनी, माथाभाँगी तथा सोना ये सभी इस बेहद घिनौने यौन-शोषण एवं प्रताडना की शिकार बनती हैं। एक आदिवासी स्त्री, जो ताउम्र संघर्ष करती है, उसके ही बेटों द्वारा अन्याय की दर्दनाक दासताँ को 'बासो-झी' कहानी बेहतरीन ढ़ंग से बयान करती है। ईसाईयों द्वारा संथाल लड़कियों को बेचा जाना तथा कितने ही लड़कों को झूठे आरोपों में फँसाए जाने की समस्या को 'हिसाब बराबर' कहानी उजागर करती है। कुल मिलाकर विवशता के शिकंजे में घिरे आदिवासी समाज का मुख्य प्रवाह के समाज के दमन तले घुटते जाना और साथ ही उनके द्वारा ढ़ाए गए यौन-शोषण एवं प्रताडना में पिसती आदिवासी स्त्री की दुर्दम्य पीड़ा को इस कहानी-संग्रह की कहानियाँ बेहद दयनीयता एवं संवेदनशीलता के साथ उजागर करती हैं।

बीज-शब्द - संथाल आदिवासी, दिकू, दमन, घुटन, संघर्ष, यौन-शोषण एवं प्रताडना।

प्रस्तावना –

सदियों से हाशिए पर रखा आदिवासी समाज बदतर जिंदगी जीता आया है। शोषण, अत्याचार, पीड़ा, हीनता, घृणा, विस्थापन आदि समस्याओं से ग्रस्त यह समाज अब अपने हक एवं अधिकारों की जागृति की कगार पर खड़ा है। सशक्त आंदोलन के रूप में आदिवासी साहित्य का सृजन हो रहा है। दलित एवं स्त्री विमर्श की तरह ही आदिवासी विमर्श के विभिन्न आयामों पर सोच-विचार होने की आवश्यकता है। वर्तमान आदिवासी साहित्यकार अपने जीवन के कटु यथार्थ अनुभूतियों को लेकर सामने आ रहे हैं, जिनमें हाँसदा सौभेन्द्र शेखर अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। वे पेशे से डॉक्टर एवं तबियत से लेखक हैं। उन्होंने अब तक कुल चार किताबें लिखी हैं। उनके पहले उपन्यास 'द मिस्टीरियस एलेमेंट ऑफ रूपी बास्के' के लिए उन्हें साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार 2015 से सम्मानित किया गया। कहानी-संग्रह 'द आदिवासी विल नॉट डान्स' के हिंदी अनुवाद 'आदिवासी नहीं नाचेंगे' को भी खूब सराहना मिली है। बच्चों के लिए उन्होंने 'ज्वाला कुमार एण्ड द गिफ्ट ऑफ फायर : एडवेंचर्स इन चम्पकबाग' लिखी है। साथ ही 'माई फादर्स गार्डेन' यह उनकी ताजा किताब है।

'आदिवासी नहीं नाचेंगे' साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार 2015 से सम्मानित हाँसदा सौभेन्द्र शेखर जी की सन 2016 में प्रकाशित कथा-संग्रह 'द आदिवासी विल नॉट डान्स' का हिंदी अनुवाद है। प्रस्तुत कथा-संग्रह का अनुवाद रश्मि भारद्वाज जी ने किया है और जो राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली द्वारा प्रकाशित है। इस कथा-संग्रह में कुल 10 कथाएँ समाविष्ट हैं। ये कहानियाँ झारखण्ड की पृष्ठभूमि पर लिखी गई हैं, जो वर्तमान राजनीतिक-सामाजिक यथार्थ को बेहद गहराई एवं संवेदनशीलता से खोलकर जन-सम्मुख रखती हैं। प्रस्तुत कहानी-संग्रह कुछ इस कदर के विवादों से घिर गया था - ''11 अगस्त 2017 को झारखंड सरकार ने इसपर प्रतिबंध लगा दिया और लेखक को उनकी नौकरी से सरसरी तौर पर निलंबित कर दिया, इस आधार पर कि पुस्तक ने आदिवासी महिलाओं और संथाल संस्कृति को खराब रोशनी में चित्रित किया है। सरकार के कार्यों की व्यापक रूप से आलोचना

की गई। और प्रस्तुत कहानी-संग्रह पर से प्रतिबंध दिसंबर 2017 में हटा दिया गया। साथ ही लेखक का निलंबन भी हटा दिया गया और उन्हें 2018 में उनकी नौकरी पर बहाल कर दिया गया था।1

आदिवासी कहानियों में आदिवासी दर्शन एवं शोषण के बारे में तथा एक आदिवासी रचनाकार की जिम्मेदारी के संदर्भ में वरिष्ठ साहित्यकार गंगा सहाय मीणा जी का कथन है, ‘‘मैंने जितनी भी आदिवासी कहानियाँ पढ़ी हैं उन कथाओं में आदिवासी दर्शन, उनका जो बाहरी लोगों के साथ संबंध है, उसके संदर्भ में दिखाई देता है। खास तौर पर आप बाहरी लोगों में दिकुओं को, जो आदिवासी इलाकों में नौकरी करने आते हैं, व्यवसाय करने आते हैं, उनको ले सकते हैं, पुलिस-प्रशासन को ले सकते हैं या फिर वे सत्ता-शासन के लोग हैं। उनके साथ में जो आदिवासी जीवन का टसल है वह द्वंद्व स्पष्ट रूप से सामने आता है। जब हम आदिवासी चेतना और दर्शन की बात कर रहे हैं तो एक रचनाकार को इतना सजग होना पड़ता है या होना ही चाहिए कि जो बाहरी प्रभाव है, बाहरी दखल है आदिवासी जीवन-दर्शन पर, वह उसकी पहचान कर पाए और पाठकों को उसकी पहचान करा पाए। किस रूप में बाहरी लोगों का दखल होता है। शोषण के अलग-अलग और कैसे-कैसे हथकंडे अपनाते हैं बाहरी लोग। वे आर्थिक शोषण करते हैं। दैहिक शोषण करते हैं आदिवासी औरतों का। इसके अलावा शोषण की एक दूसरी प्रक्रिया है जो सांस्कृतिक है। उसकी भी पहचान आदिवासी लेखकों को करनी चाहिए।...’’2 और निश्चय ही हाँसदा सौभेन्द्र शेखर जी ने अपनी कहानियों में काफी हद तक इन बातों की ओर ध्यान दिया हुआ दिखाई देता है। मूल संथाल परगने से संबंधित होने के कारण कहानीकार ने संथाल आदिवासियों के दमन की दासताँ को बेहद तीव्र संवेदनशीलता के साथ इन कहानियों में प्रस्तुत किया है।

आदिवासियों की दमन दासताँ -

1. विवशता के शिकंजे एवं मुख्य धारा के समाज का दमन -

जीवन के हर क्षेत्र में पीछड़ेपन के शिकार आदिवासियों की स्थिति किस हद तक भीषण बनी हुई है, उनकी विवशता एवं मजबूरी का फायदा उठाकर अपने-आप को मुख्य धारा का, सभ्य कहलानेवाला समाज किस प्रकार से उनका दमन कर रहा है, इसका बेहद वास्तविक चित्रण ‘आदिवासी नहीं नाचेंगे’ कहानी करती है। मटियाजोरे गाँव के एक संथाल आदिवासी मंगल मुर्मू जो मूलतः एक किसान और संगीतकार हैं, अपनी मूर्खता पर शोक जता रहा है। इस गाँव के अधिकांश खेत खदान कंपनी द्वारा काबिज किए जाते हैं। संथाल युवाओं द्वारा इसका विरोध भी किया जाता है, लेकिन किरिस्तान बहन और संथाल लड़के दोनों को कोयला कंपनी द्वारा रास्ते से हटाने का गंदा षड़.यंत्र किया जाता है। कोयला व्यापारियों ने इनके जमीन का एक हिस्सा तो दुसरे हिस्से पर पत्थर के व्यापारियों ने काबिज कर लिए हैं। ये सभी व्यापारी दिकू यानी मारवाडी, सिंधी, मंडल, भगत, मुस्लिम हैं। सारी सुविधाएँ ये भोगते हैं और इसके बदले में आदिवासी संथालों को कुछ भी नहीं मिलता, उनके हालात बेहद दयनीय बने रहते हैं। सरकारी तथा मिशनरी स्कूल की गंदी नीतियाँ तथा मुस्लिमों के अनाचार का चित्रण भी कहानी बयान करती है। शक्तिहीन एवं संख्या में कम होने के कारण कुछ न कर सकने की उनकी विवंचना कहानी में प्रकट होती है। उनका मूल धर्म - सरना धर्म... उसका अस्तित्व, जड़ें खोने की कगार पर है और जिसका कोई देश, पहचान नहीं ऐसे लोग बनते जा रहे हैं। कोयले से मानो उनका समूचा जीवन ही काला, अंधियारा हो गया है, यह कोयला ही उनको निगलने को है। ‘जोल्हा टोला’ आश्रय के लिए आया था, लेकिन वह अब इनसे भी अधिक अच्छा खासा प्रगत हो गया है, यहाँ जम गया है। संथालों में एकता नहीं है, इनका कोई नेता नहीं है, कितनेही अत्याचारों के बावजूद इनको कोई पूछता तक नहीं है। यह सारी संपदा उन्हीं की होने के बावजूद उन्हें नहीं पता की उसे कैसे बचाना है, वे इससे भाग रहे हैं।

दिकू, बिहारी और सभी ने संथाल परगना को अपने लाभ के लिए बाँटा है। मंगल मुर्मू की दिल की विवंचना है कि हमारी कला ने हमें क्या दिया है - विस्थापन और तपेदिक। इस कहानी में साठ साल से भी अधिक बूढ़े संथाल के दर्द को बयान किया गया है, जो आज भी कला के पक्ष में जीता है, जिसने दल बनाना जारी रखा है, जो अब भी प्रदर्शन करता है। संगीत, नृत्य, गीत संथालों के लिए पवित्र हैं, लेकिन भूख और गरीबी ने उसे बेचने के लिए संथालों को मजबूर किया है। सारे लाभों के लिए, स्वार्थ के लिए दिकू, लेकिन झारखंड का संस्कृति प्रदर्शन, संगीत, नृत्य का दायित्व अकेले आदिवासियों पर रहता है, यह कैसी विवंचना है?

झारखंड सरकार द्वारा आयोजित कार्यक्रम में संगीतमय प्रदर्शन में दल को लिए हिस्सा लेने में मंगल मुर्मू प्रयासरत है। इतने में उसकी बेटी मुगली जो गोड्डा जिले में स्थित है, वहाँ के गाँव-निवासियों को जमीन खाली करने का निर्देश होता है, लड़ाई होती है। वहाँ एक व्यवसायी द्वारा, जो बहुत ही अमीर, चालाक एवं सांसद है, थर्मल पावर संयंत्र बिठाने की बात की जाती है। इतने में उन्नति की आड़ में बसा सच सामने आ जाता है। संयंत्र की नींव राष्ट्रपति द्वारा रखी जाती है और यह प्रदर्शन उनके लिए होता है। एकसाथ दुःख, आश्चर्य एवं आनंद की अनुभूति को पाते संथाल आदिवासियों के मन में दर्द ही छाया रहता है। दिल की विवंचना तथा भड़ास को खोलते हुए, कटु सच का पर्दाफाश करते हुए कोई चिल्लाता है, ‘‘‘भारत महान’... क्या महान! मैं हैरान हुआ, ऐसे कौन-सा देश महान हो सकता है जो हजारों लागों को उनके घरों से बेघर करके, उनकी रोजी-रोटी छीनकर शहरों और फैक्टरियों के

लिए बिजली उत्पन्न करे। और नौकरियाँ, कौन-सी नौकरियाँ? एक आदिवासी किसान का काम खेती करना है। और कौन-सा काम करने के लिए उसे बाध्य किया जाएगा? किसी अरबपति की फैक्ट्री में नौकर बन जाना, जो फैक्ट्री उसी जमीन पर थी जो - एक हफ्ता पहले उसी आदिवासी की थी...?''3 और अंत में राष्ट्रपति महोदय के सामने मजबूर दिल की गुहार होती है कि जब तक हमें हमारा घर और जमीन वापस नहीं दी जाएगी, हम नहीं नाचेंगे... 'आदिवासी नहीं नाचेंगे'।

2. यौन-शोषण एवं प्रताडना -

आदिवासी महिलाओं के जीवन यथार्थ के विषय में 'झारखंडी महिलाओं का पलायन एवं उनका शोषण' में निर्मला जी लिखती हैं - "आदिवासी महिलाएँ जिनके पास भूख है, भूख में दूर तक पसरी उबड़-खाबड़ धरती है, सपने हैं, सपनों से दूर तक पीछा करती अधूरी इच्छाएँ हैं, जिसकी लिजलिजी दीवारों पर पाँव रखकर वे भागती हैं, बेतहाशा, कभी पूरब तो कभी पश्चिम की ओर....।"4 इस पितृसत्ताक समाज में एक आदिवासी स्त्री मरने-खपने के बावजूद अपना हक भी नहीं जता सकती है। 'प्रवास का महीना' कहानी संथाल आदिवासी औरतें एवं लडकियों पर ढ़ाए जानेवाले अकथनीय यौन-शोषण एवं प्रताडना को उजागर करती है। मजबूरी के कारण संथाल आदिवासियों को वर्धमान जिले में प्रवास करना पड़ता है। कई संथाल औरतें और लड़कियाँ मजबूरी में, भोजन और थोड़े से पैसों के लिए वेश्या व्यवसाय करने के लिए विवश हो जाती हैं। इस दमनचक्र का शिकार तालामाई किस्कू भी है, जो क्रूर पुलिसवाले के संभोग का शिकार बनती है। पूरी मानव सभ्यता पर तमाचा जड़ता, संभोग करता पुलिसवाला जब कहता है, ''साली, तुम संथाल औरतें सिर्फ इस काम के लिए ही बनी हो। तुम अच्छी हो।''5 इंसानियत के नाम पर एक जोरदार तमाचा है। इस पूरी कहानी में भूख एवं विवशता के दयनीय चित्रण के साथ आदिवासी स्त्री यौन-शोषण का दर्दनाक चित्रण दिखाई देता है। 'दुश्मन के साथ दोस्ती' कहानी में भी सुलोचना, मोहिनी तथा माथाभाँगी के शोषण को दर्ज किया गया है। बेहरा घासी जाति की हरिजन स्त्री सुलोचना की पीड़ा के साथ उसके पति दीनानाथ एवं उसकी रखैल मोहिनी के यौन-संबंधों को बेबाकी एवं नग्न यथार्थता के साथ कहानी बयान करती है। कहानी में बाबू इस पात्र के गाली-गलौज के साथ कामोत्तेजना के नग्न चित्र खींचे गए हैं, जो बाबू काफी हद तक सेक्स का व्यसनी है। बाबू द्वारा माथाभाँगी पर किया गया यौन-शोषण दिल देहला देता है। इसी प्रकार से यौन-शोषण एवं प्रताडना को कई प्रसंगों में कहानी उजागर करती है।

लक्खीपुर की सोना के माध्यम से 'सिर्फ एक रंडी' कहानी द्वारा रेड-लाईट एरिया की कडुवी सच्चाई का पर्दाफाश किया गया है। सोना अपने हर ग्राहक को खुश कर देती है, इसलिए ग्राहक हमेशा झरना-दी के पास उसकी ही माँग करते हैं, मानो रंडी होकर भी अन्य रंडियों से उसका अलगाव साफ जाहीर होता है, जब ग्राहक कहते हैं - 'सोना... सोना है... बाकी सब रंडियाँ'। सोना युवा ट्रांसपोर्टर निर्मल के प्रति धीरे-धीरे आसक्त होती चली जाती है और उसके साथ जीवन के सपने देखती है, लेकिन यह सपना झट से टूट जाता है। वह उसके गुप्तांग पर जोर से प्रहार करते हुए जबरन उसका अप्राकृतिक यौन-शोषण करता है, जो बेहद घिनौना होता है। अपमान एवं प्रताडना के झटके से वह सदमे में आ जाती है। हर ग्राहक के लिए बाजार की हर रंडी आखिर एक रंडी ही होती है, वह रंडी भले ही घर बसाने के सपने देखे, लेकिन उसकी यह ख्वाईश आखिर ख्वाईश ही बनकर रह जाती है, इस सच्चाई को कहानी भलि-भाँति प्रस्तुत करती है।

3. आदिवासी स्त्री की दुर्दम्य पीड़ा -

एक आदिवासी स्त्री, जो ताउम्र संघर्ष करती है, उसके ही बेटों द्वारा अन्याय की दर्दनाक दासताँ को 'बासो-झी' कहानी बेहतरीन ढ़ंग से बयान करती है। आदिवासी संस्कृति के विलुप्ति की समस्या को भी कहानी उजागर करती है। सारजोमडीह गाँव में बासो-झी बच्चों को 'बिडू', जो एक संथाली वीर-नायक हैं, उनकी कहानी सुनाती है। वह पूरी अच्छाई की मूरत है, लेकिन लोगों के अंधविश्वास के कारण उसकी दशा दयनीय हो जाती है। उसके छोटे बेटे का लड़का डायरिया से चल बसता है और उसे उसकी मौत का जिम्मेदार ठहराया जाता है। अपने ही बच्चों द्वारा डायन बुलाकर अपमान एवं अनाचार के घिनौने रूप को कहानी प्रस्तुत करती है -''उसके बेटे ने पूछा, ''किस बुरी शक्ति की तुम पूजा करती हो, और तुम्हें बलि के लिए कितने बच्चे चाहिए?''... उनके बेटे - उनके अपने बेटे! - उन्हें एक डायन बुला रहे थे? उन्होंने बहुत ही असहाय महसूस किया, तब से भी ज्यादा जब वह विधवा हुई थीं।''6 आखिर लाचार और मजबूर होकर सोरेन बाबू और पुष्पा के घर से भी निकलकर दर-दर के ठोकरे खाने के लिए वह विवश हो जाती है।

'सिर्फ एक रंडी' की सोना भी भीषण आघात को सहने के लिए विवश हो जाती है। सोना सही मायने में रेड लाईट एरिया की सोना होती है। अपने पेशे को बेहतरीन ढ़ंग से निभाने के कारण ग्राहक उसके प्रति बेहद आसक्त होते हैं। नंदू के कारण झरना-दी के यहाँ सोना और निर्मल की पहचान होती है। अक्सर आने-जाने के कारण सोना निर्मल को चाहने लगती है और उसके साथ के सपने देखने लगती है। लेकिन यह सपना झट से टूट जाता है और एक गहरे सदमे में वह अपने पेशे में उसी प्रकार से जीने के लिए मजबूर हो जाती है। हालाँकि झरना-दी इस कटु यथार्थ से भलि-भाँति वाकिफ है, इसलिए वह बार-बार सोना को सचेत करती रहती

है, ''अपने काम पर ध्यान दो। जिंदगी हमें पाठ पढ़ाती है। उन पाठों को पढ़ों और आगे बढ़ जाओ।''7 हर ग्राहक के लिए बाजार की रंडी आखिर एक रंडी होती है, वह उसके साथ घर नहीं बसा सकता, इस सच्चाई को कहानी भलि-भाँति प्रस्तुत करती है। इसी प्रकार 'दुश्मन के साथ दोस्ती' कहानी सुलोचना एवं मोहिनी के जीवन के दुःखद यथार्थ को बयान करती है और वे किस हद तक उसी परिवेश में कितने ही दुःखों के बावजूद उन्हें भोगने, सहलाने या लालच देने के बाद 'मूर्खता' में रहने के आदि हो गए हैं, इस सच को यह लंबी कहानी बयान करती है।

आदिवासी स्त्री पशुओं से भी बदतर जीवन जीने के लिए ववश है। बेफिक्र होकर उसकी देह का घृणास्पद व्यापार किया जाता है, जैसे वह कोई पशु या खरीदने-बेचने की निर्जीव वस्तु हो। बेहद घिनौने ढ़ंग से मनचाहा उपभोग लेकर उन्हें अपमानित कर फेंका जाता है। 13 जनवरी 2012 की घटना जारवा आदिवासी महिलाओं को विदेशी पर्यटकों के सम्मुख नाचने के लिए मजबूर किया गया तथा उनकी अर्धनग्न तस्वीरें इंटरनेट पर अपलोड की गई। व्यापारी आदिवासी लड़कियों को बहला फुसलाकर भगा ले जाते हैं और उन्हें देह व्यापार हेतु झोंक दिया जाता है। आमतौर पर नाबालिग तथा गरीब परिवारों की लड़कियों को अपना शिकार बनाकर तस्कर सम्पन्न राज्यों में बेच देते हैं। झारखंड, असम, पश्चिम बंगाल जैसे पिछड़े राज्यों की गरीब लड़कियाँ गाय-बैल से भी कम कीमत पर बिक जाती है। सरकारी और गैर-सरकारी सूत्रों के मुताबिक हरियाणा और पंजाब जैसे राज्यों में गरीब खासकर आदिवासी लड़कियों की कीमत 5 हजार से 15 हजार रुपये तक है।8 ईसाईयों द्वारा संथाल लड़कियों को बेचा जाना तथा कितने ही लड़कों को झूठे आरोपों में फँसाए जाने की समस्या को 'हिसाब बराबर' कहानी उजागर करती है। प्रेमी दिलीप को पाने की हद को पार करती गीता के दोलायमान जीवन की उथल-पुथल को 'ब्लू बेबी' कहानी प्रस्तुत करती है। बेईंतहा प्रेम और दगाबाज प्रेमी के प्रति की आसक्ति, उसकी राह तकना, शादी के बाद भी उसके बच्चे को लेकर उसकी आस आदि को कहानी चित्रित करती है। बल्कि पति सुरेन गीता से बेहद प्यार करनेवाला है, हालाँकि अंत में दिलीप और उसके बच्चे को भी गीता द्वारा त्यागा जाता है। 'अंतिम इच्छा' में एक बच्चे कुनु की जलेबियों की अंतिम इच्छा और संघर्षरत माँ सुभाषिणी की असहायता का बखूबी चित्रण हुआ है।

4. मुख्य प्रवाह के समाज के दमन तले घुटता आदिवासी समाज -

अपने-आप को सभ्य तथा मुख्य प्रवाह में गिने जाने वाले समाज में संथाली आदिवासी परिवार की घुटन को 'वे मांस खाते हैं' कहानी प्रकाशित करती है। मांस खाने के आदिन परिवार की बगैर मांस के जीने की स्थिति, फिर झापान-दी के यहाँ अक्सर मांस खाने जाना तथा रहने के लिए विवश अवस्था में पूरे परिवार एवं राव परिवार की मानसिक दशा का अंकन कहानी करती है। गोदरा हत्याकांड के दंगों के भयावह नतीजों में मुस्लिम बेसहारा औरतों के पक्ष में लड़ने की मानवीयता के दर्शन भी कहानी की एक बड़ी विशेषता है। 'बेटे' एक परिवार के रिश्ते-संबंधों, संस्कारों, नीति-मूल्यों के उतार-चढ़ाव की अनूठी कहानी है। सूरज और रघू दो संस्कारों में पले-बढ़े बेटों की कथा को कहानी बयान करती है। लेकिन भ्रष्टाचार, गबन को लेकर आदिवासी मन की अनूठी सच्चाई को कहानी कुछ इस प्रकार से बयान करती है, ''देखो, जवाई बाबू, मत भूलो कि हम आदिवासी चोरी करने में बहुत ही नासमझ हैं। भ्रष्टाचार हमारे खून में नहीं है। और तब भी अगर हम कोई अपराध करते हैं, तो हम उसे छुपाने के मामले में बहुत ही नौसिखिए हैं।...''9 समूचे आदिवासी जन-जीवन के साफ मन की सच्चाई का प्रकाशन इस वाक्य से होता है। साथ ही 'प्रवास का महीना' में पुलिसवाले के द्वारा तालामाई किस्कू पर किया गया अत्याचार, 'हिसाब बराबर' में ईसाईयों द्वारा संथाल लड़कियों को बेचा जाना तथा कई लड़कों को झूठे आरोपों में फसाए जाने की विवंचना को प्रकाशित किया गया है। 'दुश्मन के साथ दोस्ती' में मुख्य प्रवाह के समाज का अमीर एवं सेक्स का व्यसनी बाबू मोहिनी एवं माथाभाँगी का अकथनीय शोषण हो या 'सिर्फ एक रंडी' के निर्मल तथा नंदू द्वारा सोना पर किए गए अत्याचार हो, आदिवासियों पर मुख्य प्रवाह के समाज का शोषण-चक्र निरंतर चलता ही जा रहा है।

निष्कर्ष –

वर्तमान आदिवासी साहित्यकार अपने जीवन के कटु यथार्थ अनुभूतियों को लेकर सामने आ रहे हैं, जिनमें हाँसदा सौभेन्द्र शेखर अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। 'आदिवासी नहीं नाचेंगे' कहानी-संग्रह कहानियाँ झारखण्ड की पृष्ठभूमि पर लिखी गई हैं, जो वर्तमान राजनीतिक-सामाजिक यथार्थ को बेहद गहराई एवं संवेदनशीलता से खोलकर जन-सम्मुख रखती हैं। ज्यादातर मार्मिक बन पड़ी कहानियों में आदिवासियों की जिंदगी की दुर्दशा का चित्रण उन्होंने किया है। मूल संथाल परगने से संबंधित होने के कारण कहानीकार ने संथाल आदिवासियों के दमन की दासताँ को बेहद तीव्र संवेदनशीलता के साथ इन कहानियों में प्रस्तुत किया है। वर्णनात्मकता, प्रकृति-चित्रण, पात्रों की मनोवैज्ञानिकता, प्रभावान्विति, बेहतरीन शब्द-चयन आदि इन कहानियों की विशेषताएँ हैं।

आदिवासियों की विवशता एवं मजबूरी का फायदा उठाकर अपने-आप को मुख्य धारा का, सभ्य कहलानेवाला समाज

किस प्रकार से उनका दमन कर रहा है, इसका बेहद वास्तविक चित्रण 'आदिवासी नहीं नाचेंगे' कहानी करती है। संगीत, नृत्य, गीत संथालों के लिए पवित्र हैं, लेकिन भूख और गरीबी ने उसे बेचने के लिए संथालों को मजबूर किया है। दिकुओं का दमन एवं घर तथा जमीन के लिए संघर्ष करने की विवशता को कहानी उजागर करती है। आदिवासियों पर मुख्य प्रवाह के समाज का शोषण-चक्र निरंतर चलता ही जा रहा है। अपने-आप को सभ्य तथा मुख्य प्रवाह में गिने जाने वाले समाज में संथाली आदिवासी परिवार की घुटन को 'वे मांस खाते हैं' कहानी प्रकाशित करती है। 'प्रवास का महीना', 'दुश्मन के साथ दोस्ती' तथा 'सिर्फ एक रंडी' कहानियाँ संथाल आदिवासी औरतें एवं लडकियों पर ढ़ाए जानेवाले अकथनीय यौन-शोषण एवं प्रताडना को उजागर करती हैं। तालामाई किस्कू, सुलोचना, मोहिनी, माथाभाँगी तथा सोना ये सभी इस बेहद घिनौने यौन-शोषण एवं प्रताडना की शिकार बनती हैं। एक आदिवासी स्त्री, जो ताउम्र संघर्ष करती है, उसके ही बेटों द्वारा अन्याय की दर्दनाक दासताँ को 'बासो-झी' कहानी बेहतरीन ढ़ंग से बयान करती है।

हर ग्राहक के लिए बाजार की हर रंडी आखिर एक रंडी ही होती है, वह रंडी भले ही घर बसाने के सपने देखे, लेकिन उसकी यह ख्वाईश आखिर ख्वाईश ही बनकर रह जाती है, इस सच्चाई को 'सिर्फ एक रंडी' कहानी भलि-भाँति प्रस्तुत करती है। इसी प्रकार 'दुश्मन के साथ दोस्ती' कहानी सुलोचना एवं मोहिनी के जीवन के दुःखद यथार्थ को बयान करती है और वे किस हद तक उसी परिवेश में कितने ही दुःखों के बावजूद उन्हें भोगने, सहलाने या लालच देने के बाद 'मूर्खता' में रहने के आदि हो गए हैं, इस सच को यह लंबी कहानी बयान करती है। ईसाईयों द्वारा संथाल लड़कियों को बेचा जाना तथा कितने ही लड़कों को झूठे आरोपों में फँसाए जाने की समस्या को 'हिसाब बराबर' कहानी उजागर करती है। कुल मिलाकर विवशता के शिकंजे में घिरे आदिवासी समाज का मुख्य प्रवाह के समाज के दमन तले घुटते जाना और साथ ही उनके द्वारा ढ़ाए गए यौन-शोषण एवं प्रताडना में पिसती आदिवासी स्त्री की दुर्दम्य पीड़ा को इस कहानी-संग्रह की कहानियाँ बेहद दयनीयता एवं संवेदनशीलता के साथ उजागर करती हैं।

संदर्भ :

1. आदिवासी नहीं नाचेंगे : कहानियाँ, https://www.hmoob.in/wiki/The_Adivasi_Will_Not_Dance:_Stories
2. संपा. वंदना टेटे, आदिवासी दर्शन और साहित्य, (भारत, नोशनप्रेस : प्रथम संस्करण 2021) पृ. 80-81
3. हाँसदा सौभेन्द्र शेखर, आदिवासी नहीं नाचेंगे, (दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्ज : प्रथम संस्करण 2016) पृ. 185
4. निर्मला पुतुल की कविताएँ : आदिवासी पीड़ा और प्रतिरोध का काव्य-संसार - रेखा सेठी http://www.streekaal.com/ से उद्धृत
5. हाँसदा सौभेन्द्र शेखर, आदिवासी नहीं नाचेंगे, (दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्ज : प्रथम संस्करण 2016) पृ. 50
6. वही, पृ. 130
7. वही, पृ. 168
8. आदिवासी कविता : स्वयं को तलाशती स्त्री - डॉ. विशाल शर्मा, https://www.sahityakunj.net/ से उद्धृत
9. हाँसदा सौभेन्द्र शेखर, आदिवासी नहीं नाचेंगे, (दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्ज : प्रथम संस्करण 2016) पृ. 41